लोग कहें तू ध्यान लगा

लोग कहें तू ध्यान लगा, ध्यान में तू आयेगा।
पहले मेरे सामने आ, स्वतः ध्यान यह लग जायेगा।।

ध्यान की बातें नाहिं करो, ध्यान का ध्यान मैं क्यों करूँ।
मन में मेरे तू ही बसा, ध्यान मेहमान मैं क्यों करूँ।।

जब मैं ध्यान लगाऊँगी, तेरा ध्यान तो आयेगा।
तू ही हुआ न सामने, तो ध्यान क्या काम आयेगा।।

गर सच है तो तू सामने आ, और यह स्वयं तू मुझे दिखा।
तो ही तो जान मैं पाऊँगी, जब तुमको लूँगी सामने पा।।

पावनकर्ता कहें तुझे, मुझको भी पावन करो।
इस दुःखियारी के दुःख भी, श्याम निवारण तुम करो।।

अब कुछ भी करो जो भी ले लो, यह 'मैं' छोड़ो या बीन लो।
बहु पाप मेरे बहु जन्मन् के, अरे आकर इनको बीन लो।।

अब जो भी करो हे राम मेरे, इक बेरी दर्शन मुझको दो।
पात्र नहीं जो दर्शन की, तुम ही आ पावन करो।।

तुमने ही तो कहा है राम, मैं तो यह तन हूँ ही नहीं।
तो कहो राम मुझे आ करके, हूँ कौन जो तेरी हुई नहीं।।

अर्पणा भजनावली - ३७८

प्रार्थना शास्त्र नं. १/१६७

अनुक्रमणिका

३. **कलियुग एको नाम आधार**
पूज्य छोटे माँ

७. **'अनमोल का मोल धरा न जाई,**
कीजे लाख वा की लिखवाई'
अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से

१२. **मेरी कहानी**
डॉ. जे. के. महता

१५. **'दर्शन तोरे उतने मिलें,**
जितने 'मैं' रे देख सकूँ'
पिता जी के प्रश्नोत्तर

२०. **जितनी-जितनी जीव की 'मैं' लुटती है, उससे कहीं ज़्यादा दैवी सम्पदा मिलने लगती है!**
श्रीमती पम्मी महता

२३. **'परा विद्या आसरे,**
परम योगी हो जाये!'
'मुण्डकोपनिषद्' में से

२७ **'...जो श्रद्धावान होगा,**
वह सत्यपरायण होगा ही!'
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता – भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' में से

३२. **जिज्ञासा बनी रहती,**
आप माँ मुझे बतायेंगे ज़रूर...
श्रीमती पम्मी महता

३५. **अर्पणा समाचार पत्र**

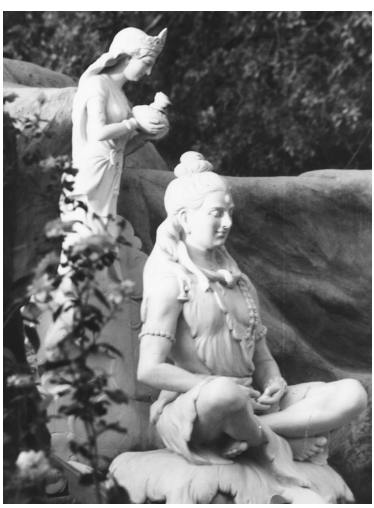

❖ ❖ ❖

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा ९ मार्च २०१६ को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

कलियुग एको नाम आधार

कलियुग में नाम तो बहुत लिया जाता है, परन्तु चित्त पावनता की राह से बिलकुल विपरीत राहों पर जाता है। राग-द्वेष, अहंकार, मोह इत्यादि घटने की बजाय और अधिक बढ़ जाते हैं। किसी साधक द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर पूज्य माँ ने उस साधक के स्तर पर जाकर जो उत्तर दिया उसी की एक झलक यहाँ प्रस्तुत है -

परम पूज्य माँ मन्दिर में

प्रश्नकर्ता - तुलसीदास जी ने रामायण में कहा है -

"कलियुग एको नाम आधार।
सिमर सिमर नर उतरेहुँ पार।।"

परन्तु यह भी सुनते हैं राम नाम भी तभी ले सकते हैं यदि भगवान की कृपा हो, ऐसी अवस्था में हमारे जैसे मूढ़ क्या करें?

परम पूज्य माँ - इस बात में ही जीव भूल कर जाता है। कृपा का आसरा लेकर वह नाम लेना ही बन्द कर देता है। वास्तव में यह अपने ही मन की बेईमानी है। वास्तविकता तो यही है कि नाम उसी की कृपा से लिया जा सकता है, परन्तु देखना तो यह है कि 'क्या हम उस कृपा के पात्र हैं?' उस कृपा को प्राप्त करने के लिए पुकार तो अपनी ही चाहिए, द्वार तो स्वयं ही खटखटाना होगा।

यह कहना कि ‘कृपा के बिना नाम कैसे लें’ झूठ है, क्योंकि व्यावहारिक स्तर पर हम इस बात को मानते नहीं। जग में हमें रोटी तब मिलती है, जब हम पकाते हैं, कपड़े तब मिलते हैं जब हम बनाते हैं, इतनी मेहनत करके हम घर बनाते हैं। जब हम मेहनत करते हैं तो बच्चे अपने बनते हैं, यदि वहाँ हम मेहनत न करें, तो वह भी छूट जायें। इसी प्रकार परिवार तभी अपने बनते हैं जब हम मेहनत करें। लेकिन नाम लेने के समय हम कहते हैं कि भगवान ही कृपा करें तो हम नाम लें।

देखो! कितनी अद्भुत बात है कि हमने एक ही चीज़ छोड़ी भगवान के नाम पर, वह है भगवान का नाम! सत्यता को तो छोड़ ही दिया और बाक़ी सब को अपना लिया। हम अपने आप को भगवान के चरणों से वंचित रख लेते हैं, जो शुद्ध रूप में केवल सच्चाई है! दुःखदायी दुनिया में जो सुखदायी अंश है, उसी को छोड़ देते हैं और सुख की तलाश में भरमाते रहते हैं।

हमारे अंतःकरण में, चित्त में मल पड़ी है। सुना है कि ‘नाम लिये चित्त निर्मल होये’। यदि नाम लेने से ही चित्त निर्मल होता है, तो फिर इस बात पर ध्यान लगाना है कि यह निर्मलता कैसे आये? जीव को अपनी निजि अवस्था के जब सच्चे दर्शन अपने आंतर में होते हैं, तो वह तड़प कर पुकार उठता है -

“हे राम! मैं जन्म-जन्म का अंधा हूँ। ‘मैं’ की आँखों पर पट्टी बाँध रखी है। विषय रमणी वृत्ति को लेकर, मैं जग में हर पल नया संग करता हूँ, फिर उस संग की नई पट्टी बनाकर उसे आँखों पर बाँधता रहता हूँ। कोई नई चाहना लाकर, उसमें रंग भरकर उसे तीव्र करते करते उसी की पूर्ति के प्रयत्न में मैं और भी अंधा हो जाता हूँ, फिर बिलकुल देख ही नहीं पाता। जब मुझे एक से संग हो जाता है तो सारा सत् भूल जाता है। दीखता भी नहीं कि यह सत् है। हे राम तू ही बता मैं क्या करूँ?”

जिसने यह सत् देख लिया और अपना अंधापन मान लिया वह त्राहि-त्राहि पुकार उठेगा। फलस्वरूप उसका चित्त निर्मल हो ही जायेगा। जब ऐसी अवस्था आती है, तब हम भगवान के चरणों में बैठकर उनसे उन्हीं को माँगते हैं।

तभी उन्हीं के प्रेम में उन्हीं के चरणों से लिपट सकते हैं। उन्हीं के प्रेम की बुंदियाँ हमारे अचेत में बसे संस्कारों को भी पावन कर सकती हैं। आश्चर्य तो इस बात का है कि हमारे अपने अचेत चित्त तक हमारी पहुँच नहीं। जिसने एक बार अपने इस अंधेपन को देख लिया वह तड़प कर पुकार उठेगा “हे मन! तूने अपने आप को अंधा क्यों कर लिया है? मैं नहीं जानता कि कौन सी चाहना कहाँ छिपी है, कौन सी मल है जो मुझे सत्यता नहीं देखने देती”।

अब इस मल से उठने के लिए एक ही चीज़ चाहिये - वह है भगवान की भक्ति और भगवान का साक्षित्व, ताकि जीवन में कहीं मेरे से ग़लती न हो जाये। ‘हे भगवान! तू मेरे संग चलो, कहीं राहों में मैं किसी को तड़पा न दूँ, अपनी सत्यता को छोड़ न दूँ। मैं अपनी

किसी मान्यता के कारण कोई ऐसी बात न कह दूँ, जो न्यायपूर्ण न हो। मैं कोई ऐसा कर्म न कर बैठूँ, जिसमें तू न हो, जिसको फूल बनाकर तेरे चरणों में चढ़ा न सकूँ।

हे भगवान! मुझे अपना ही ऐतबार नहीं... मैं किसी के ऐतबार की बात क्या कहूँ।

हे भगवान! तू हर पल मेरे संग चलो, बाहर तो मैं देख सकता हूँ, परन्तु मैं यह नहीं जानता कि मुझ पर ही अपना राज्य नहीं...

मैं अपने पर काबू नहीं डाल सकता,

मैं अपने को देख नहीं सकता,

मैं अपने को जान नहीं सकता।

मैंने देखा है कि जब घर में मेहमान आ जाये, तो हमारा व्यवहार बदल जाता है। यदि तुम हर पल मेरे संग रहो, तो संभवतया मेरा पाषाण हृदय भी पिघले और परिणामस्वरूप बाह्य व्यवहार भी बदलने लगे।'

यदि हम अपनी आंतरिक अवस्था जान लें तो यही कहेंगे 'हे भगवान! मेरे साथ-साथ चलो क्योंकि मैं देखता भी नहीं कि मैं क्या करता हूँ? मेरे अन्तःकरण में क्या है? मेरे चित्त

पूज्य छोटे माँ, श्री आर. एम. सबरवाल एवं अन्य सदस्य

में क्या है? मेरे से ऐसी बात क्यों होती है? कैसे होती है? मैं जो हूँ- यह क्यों हूँ? मैं यह भी नहीं जानता कि मैंने सब भावों को आंतर में अचेत में छिपा लिया है और ऊपर से उनसे अनभिज्ञ हूँ। अब तो एक ही रास्ता है कि भगवान तेरा नाम लें, तेरे चरणों में रहें। हे भगवान! तू तो देख सकता है। मैं कैसे कहूँ कि मैं जानता हूँ। दूसरे को जानना तो दूर रहा, मैं तो अपने को भी नहीं जानता। मैं तो अपने से ही बेगाना हूँ।"

यदि हम यह विस्तारपूर्वक देखते रहें तो पता चलेगा कि मन का अनन्त विस्तार वास्तव में अपने आंतर में ही निहित है। हमारी सारी दुनिया तथा उसके प्रति जो हम कर्म करते हैं, सभी इस मन के आश्रित हैं। हमारी कालिमा हमें अपने को भूलने नहीं देती इसलिये कैसे पता चले कि हमने प्रेम आरम्भ भी किया है या नहीं। वास्तव में हम ही अपने सत् को बरदाश्त नहीं कर सकते। इसी कारण हम नाम नहीं ले सकते।

जब सत् से प्रेम होगा तो हम अपना क्रोध, अपना संग, अपनी वृत्तियाँ ख़ुद बरदाश्त नहीं करेंगे। अपनी पलायनकर वृत्तियाँ, स्वयं को छुपा लेने वाली वृत्तियाँ हम सह न सकेंगे। हम अपनी ही चाहनाओं को सह नहीं सकेंगे।

अब हम कहते हैं हम दूसरे को सहन नहीं करते, फिर हम अपने आप को सहन न कर सकेंगे। इसकी तुला क्या होगी? जब हम कभी कभी अधिक भड़क जायें और दूसरा आदमी हमें अधिक बुरा लगने लगे और हमारी दोष दृष्टि में तीक्ष्णता आ जाये तो पता चलेगा कि वास्तव में हम अपने आप को सहन नहीं करते।

साधु सदैव दूसरों की भूल को छिपा लेता है, उसे मना लेता है और अंग लगा लेता है! साधु दूसरे का आँसू नहीं देखना चाहता। साधु तो पीड़ा हरक होता है, वह दूसरे की पीड़ा को अपनी पीड़ा बना लेता है, स्वयं चाहे अपमानित हो जाये।

विशेषतया जब दूसरा साधु हो तो वह अपनी जान भी दे देता है, वह तो साधारण इनसान के लिए भी जान देता है।

ऐसे साधु की बात क्या कहिए! ऐसे के प्रेम की क्या कहिये! हमारे पास वह प्रेम कहाँ! ऐसी अवस्था में जानना चाहिए कि हमारे मन में कौन सी कालिमा है - जिसके कारण हम ऐसा प्रेम नहीं कर सकते। तब जीव पुकारता है,

"तेरे चरण मिलें, तुझमें भक्ति हो,

मेरी आसक्ति चरणानुरक्ति में बदल जाये,

तब ही थोड़ी सी भक्ति उठी आयेगी।"

साधक तो इसी नाम की खोज में है और आयुपर्यंत यही माँगता रहता है। अपने आंतर के ऐसे दर्शन के पश्चात् ही उस नाम का जन्म होता है जिसके सिमरन से जीव भव-सागर से पार हो जाता है।

(पूज्य छोटे माँ द्वारा प्रस्तुत यह लेख मार्च १९८५ के अंक में से लिया गया है) ❖

अनमोल का मोल धरा न जाई,
कीजे लाख वा की लिखवाई

गतांक से आगे–

पौड़ी २६

अमुल गुण अमुल वापार।
अमुल वापारीए अमुल भण्डार।
अमुल आवहि अमुल लै जाहि।
अमुल भाइ अमुला समाहि।
अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु।
अमुलु तुलु अमुलु परवाणु।
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु।
अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु।
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ।

आखि आखि रहे लिव लाइ।
आखहि वेद पाठ पुराण।
आखहि पड़े करहि वखिआण।
आखहि बरमे आखहि इंद।
आखहि गोपी तै गोविंद।
आखहि ईसर आखहि सिध।
आखहि केते कीते बुध।
आखहि दानव आखहि देव।
आखहि सुरि नर मुनि जन सेव।
केते आखहि आखणि पाहि।
केते कहि कहि उठि उठि जाहि।
एते कीते होरि करेहि।
ता आखि न सकहि केई केइ।
जेवडु भावै तेवडु होइ।
नानक जाणै साचा सोइ।
जे को आखै बोलु विगाड़ु।
ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु।।२६।।

शब्दार्थ : उसके अमूल्य गुण हैं तथा अमूल्य व्यापार हैं। अमूल्य व्यापारी तथा अमूल्य भंडार है। उसके पास अमूल्य आते हैं तथा अमूल्य बख़्शिश ले जाते हैं। (उसका) प्रेम अमूल्य है, अमूल्य उसमें समाते हैं। उसके अमूल्य न्याय तथा अमूल्य दरबार हैं, अमूल्य तराज़ू तथा अमूल्य बाट हैं। अमूल्य बख़्शिश तथा अमूल्य निशान हैं, अमूल्य मेहर तथा अमूल्य आज्ञा है। वह अमूल्य से अमूल्य है, उसको कहा नहीं जा सकता। उसकी बात कह कह कर अनेक उसमें अपनी वृत्ति लगा रहे हैं, वेदों तथा पुराणों के पाठ कह रहे हैं। अनेकों पढ़े हुए ज्ञान का व्याख्यान करके उसकी बात कह रहे हैं। ब्रह्मा तथा इन्द्र भी उसकी स्तुति कर रहे हैं। गोपियाँ और कृष्ण भी उसकी ही बात कह रहे हैं। शिव और सिद्ध गण भी उसकी ही बात कह रहे हैं। उत्पन्न हुए अनेकों बुद्ध अर्थात् ज्ञानी जन उसकी ही बात कह रहे हैं। उसकी ही बात दानव कहते हैं और देवता भी कहते हैं। श्रेष्ठ पुरुष, मुनि जन तथा सेवक भी उसकी ही कह रहे हैं। अनेक कह रहे हैं, अनेक कहने की कोशिश करते हैं, अनेक कह कह कर उठ उठ कर चले जा रहे हैं। जितने वर्णन आगे किये हैं, यदि इतने ही वर्णन और कर दें, तब भी कोई उसकी बात कह नहीं सकता। वह जितना बड़ा चाहे, उतना बड़ा हो जाता है। हे नानक! वह परमात्मा ही सच्चा है और वह ही अपने को जानता है। यदि और कोई बहुत बोलने वाला कुछ कहे, तब उसको गँवारों का भी बड़ा गँवार लिखा जाता है।

पूज्य माँ :

गुण वाके अमूल्य हैं, अमूल्य कर्म भण्डार।
अमूल्य वा वर्तन कहें, अमूल्य गुण भण्डार।।१।।

कोई अमूल्य आवे चरणन् में, ले जाये अमूल्य प्रसाद।
अमूल्य प्रेम भगवान का, अमूल्य नाम का भाव।।२।।

अमूल्य धर्म अमूल्य दीवान, अमूल्य न्याय अमूल्य इन्सान।
अमूल्य रहमत अमूल्य नाम, अमूल्य इनायत अमूल्य प्रमाण।।३।।

अनमोल का मोल धरा न जाई, कीजे लाख वा की लिखवाई।
कीजे वेद पुराण पढ़ाई, कही न जाये वाकी बड़ाई।।४।।

ब्रह्मा इन्द्र गोपी गोबिन्द, शिव सिद्ध कह न पाये।
देव दानव सुर नर मुनि दास, अनमोल का मोल न पा पाये।।५।।

कही कही कोई कहते जायें, कोई कही थकें और उठ जायें।
कई गायेंगे कई गुण गायें, तो भी गुण कबहुँ न पायें।।६।।

जितना ध्यायें जैसे ध्यायें, जैसे मानें वैसे पायें।
ख़ुद को वह ही जाने है, जितना जानें वह हो जायें।।७।।

वह स्वयं ही अपने को जाने, वह आप प्रकट ही हो जाये।
उसको कौन यहाँ जान सके, वर्णन कर ही न पाये।।८।।

वह स्वयंभू स्वयं प्रकाश, ख़ुद को ख़ुद ही वह जाने।
दिव्य स्वरूप विश्वेश्वर वह, ओंकार ख़ुद को जाने।।९।।

अचिन्त्य असीम ससीम उसे, केवल मूढ़ ही कर सकें।
लेखनीबद्ध उसे कस कीजे, अकथ्य कथन कस कर सकें।।१०।।

इसलिये बस यही कहते हैं :-

अनमोल तेरा नाम, अतुल्य तेरा नाम।
कैसे लूँ मैं नाम, न जानूँ तेरा नाम।।११।।

वर्णन किया न जाये, तेरा गुण गाया न जाये।
कैसे जानूँ तुझको नानक, अन्त पाया न जाये।।१२।।

अमूल्य अतुल्य अगोचर तू, वर्णन किया न जाये।
अचिन्त्य रूप विवाद रहित, कौन तेरे गुण गाये।।१३।।

असीम तू अपरम्पारा, तेरा पार पाया न जाये।
अलौकिक दिव्य स्वरूप तू, तुझको जाना नहीं जाये।।१४।।

अनमोल है तू बेमोल बिके, पर नाम गाया नहीं जाये।
जो बुलाये तुझे मालिका, तू नित्य प्रकट हो जाये।।१५।।

जिस भी भाव में आये दर पे, उस भाव में तुझको पाये।
कोई विधि करो नानका, मन तेरे चरण ही चाहे।।१६।।

जितना कोई ध्याये उसे, उतना ही वह पाये।
जैसे रूप में ध्याये उसको, वैसा ही वह बन जाये।।१७।।

जितना बड़ा माने उसे, वह उतना बड़ा हो जाये।
जितना सत माने उसे, वह प्रकट हो जाये।।१८।।

केवल नाम ही सत्य है, गर मन जान यह जाये।
जीवन में व्यापार करे, तो नाम के ही गुण गाये।।१९।।

अतुल्य व्यापारी उसे कहें, व्यापार नाम किये जाये।
नाम की चरणी में बैठी, नाम ही वह लिये जाये।।२०।।

हर भाव में बैठ करी, साँचो नाम कमाये।
हर कर्म हर ही भाव में, भण्डार नाम खुल जाये।।२१।।

अतुल्य तराज़ू तोलनी, कौन तोल तुझे पाये।
फिर भी देख मेरे बादशाह, मन तुझको तोले जाये।।२२।।

तेरा न्याय मेरे बादशाह, अज मुझसे सहा न जाये।
रहम कर मेरे मालिका, हम तेरे दर पे आये।।२३।।

कुछ किरपा तेरी हो जाये, तू क्षमा स्वरूप कहलाये।
अनुग्रह कुछ मुझपे करो, मन मोल तेरा न पाये।।२४।।

दीनाबन्धु आप तू, हम दीन भिखारी आये।
अनमोल है यह तो जान लिया, वर्णन भी किया नहीं जाये।।२५।।

सुनी सुनी ज्ञान मैं हार गई, मुझे कुछ भी समझ नहीं आये।
अशरण की शरणा नानका, हम तोरी शरण में आये।।२६।।

यह ज्ञान जो आज पुनि दो, मेरी समझ न आये।
कुछ तो कहो मेरे मालिका, मन चरणन् में टिक जाये।।२७।।

कोई बयान करे वर्णन करे, कोई भावुक तव गुण गाये।
मोपे कुछ भी नहीं मैं क्या करूँ, हम तुझको पूछन आये।।२८।।

दयानिधि करुणेश्वरा, तुम राह दीजो बताये।
हम शरण पड़े तोरे भगवन्, जब तू ही राह दिखाये।।२९।।

वह ही दर पे आ सके, प्रसाद तुम से पाये।
प्रेम स्वरूप मेरे बादशाह, जहाँ रहम तेरी हो जाये।।३०।।

इसलिये :-

पुनि पुनि बैठे चरणन् में, पुनि पुनि लें वा नाम।
मन मेरे गर चित्त लगे, जित लगे वही वा धाम।।१।।

गुण गाये न गा सकें, सिमरे सिमरन न होये।
अनमोल अतुल्य को तोलूँ क्या, उसका मोल न कोय।।२।।

जो हुक्म मिला है उसकी रज़ा, चाहना वो ही होये।
सुनूँ सुनूँ वा बातें अब, जीवन वा रंगी होये।।३।।

कर्मन् में वह आ उतरे, गुण साँचो तब ही होये।
कौन गुण वा का एको, सब जा एक वह होये।।४।।

इतना समझे अब तलक, पर समझे न कोय।
हमें चरण की धूलि मिल जाये, तो जन्म सफ़ल अब होये।।५।।

यह सब कैसे मैं करूँ, कैसे चिन्तन होये।
समझ समझ के भी थकूँ, समझ पड़े तो होये।।६।।

ऐसी बात मन जान ले, अब नाम सफ़ल तब होये।
नानक चरण में रहने दे, जन्म सफ़ल मन होये।।७।।

क्रमशः

Form IV (See Rule 8)

1. Place of Publication: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
2. Periodicity of Publication: Quarterly
3. Printer's name: Mr. Ajay Mittal   Nationality: Indian
   Address: Sona Printers Pvt. Ltd., F-86/1 Okhla Industrial Area, Phase I, New Delhi 110020
4. Publisher's name: Mr. Harishwar Dayal   Nationality: Indian
   Address: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
5. Editor's name: Ms. Poonam Malik   Nationality: Indian
   Address: Arpana Trust, Madhuban, Karnal 132037, Haryana.
6. Names and addresses of individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than one percent of the total capital: Arpana Trust.

I, Harishwar Dayal, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Harishwar Dayal
Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana

मेरी कहानी

"धन्य गुरु मेरे आपुनो, जिन राह दियो दिखाये।"

डॉ. जे. के. महता (पापा जी) द्वारा प्रस्तुत लेख दिसम्बर १९८६ के अंक में से लिया गया है

भगवान ने गीता में कहा है :-

"ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।।

श्रीमद्भगवद्गीता ४/११

अर्थात् - *जो मुझे जिस भाव से भजता है अथवा पुकारता है मैं उसे उसी भाव में भजता हूँ अथवा उसी रूप में मिलता हूँ।"*

मेरा जीवन इसका एक सजीव प्रमाण है। जब से पूज्य माँ मेरे जीवन में आये हैं, आज तक आश्चर्यचकित एवं कृत-कृत हो बस यही तो देख पा रहा हूँ। जब अभी मैं कॉलेज में ही पढ़ता था, नास्तिक वृत्ति ने मन में एक भयंकर संशय उत्पन्न किया - 'भगवान की कोई हस्ती नहीं है।' मन के एक छोटे से आस्तिक भाव ने धीरे से पुकारा, "मैं अज्ञानी, सीमित बुद्धि तुझे नहीं जान सकता। हे भगवान, यदि तुम हो, इसका प्रमाण तुम मुझे स्वयं दो!" इस के पश्चात् सर्वप्रथम श्रीमद्भगवद्गीता, फिर महर्षि पातँजलि कृत योगसूत्र, फिर उपनिषद् और अन्त में श्रीमद्भागवत्, योगवशिष्ठ और तुलसीकृत रामायण आदि शास्त्रों के साथ मेरा परिचय होता गया। इन सब से मेरा अनुभव एक ही था। जिस भी ग्रंथ की मेरे लिये उस पल आवश्यकता होती, किसी संत के साथ मेरा सम्पर्क हो जाता, जिस के द्वारा उस ग्रंथ में मेरी रूचि पैदा होती। हर बार मैं स्वयं हैरान था, भगवान

अपना प्रमाण आप दे रहे हैं। मेरे सरल हृदय पर भगवान की आस्तिकता का प्रमाण बढ़ता गया और परिणामस्वरूप भगवान श्री कृष्ण के चरणों में मेरा चित्त टिक गया। मन ने कहा, 'यही भगवान हैं, पर मैं इन्हें जानता नहीं!'

मेरे जीवन का एक और भाव बहुत प्रधान था, जिस में मेरा बहुत दृढ़ विश्वास था - 'जग में प्रचार शब्दों से नहीं, जीवन के द्वारा किया जाता है। लोगों को आदर्श बनाने के प्रयत्न के अतिरिक्त मैं अपने आदर्श पर चल पड़ूँ तो दूसरे मेरे प्रमाण को देख कर स्वयं बदल जायेंगे।' छात्रकाल के पश्चात् जब जीवन में मैं अपने पाँव पर खड़ा हुआ तो जैसे जैसे मेरा संसार उज्जवल होता गया, नाम एवं शोभा बढ़ती गई, मेरे क़दम मेरे आदर्श की ओर बढ़ने की बजाय पीछे की ओर चलने लगे। मैं अपने इस पतन को देख रहा था परन्तु कुछ भी कर नहीं पा रहा था। कभी जग को, कभी कुल परिवार को दोष देता था परन्तु हृदय में अपने इस पतन से बचने की पुकार श्री भगवान के चरणों में करता रहता था। सूरदास की यह पंक्ति मुझे बहुत भाती थी –

मो सम कौन कुटिल खम कामी।
जिस तन दिया ताहि बिसरायो, ऐसो नमक हरामी।।

और अन्त में –
सुर पतित की ठौर कहाँ है, तुम बिन श्रीपति स्वामी।।

जीवन के ऐसे ही मोड़ पर 'सद्गुरु' की ज़रूरत महसूस होने लगी। भक्तों के, सन्तजनों के प्रति श्रद्धा का भाव पलने लगा। गुरु नानक की यह पंक्ति मुझे बहुत भाने लगी-

कपड़े जिनांह दे रतड़े, कन्त जिन्हां दे पास।
धूल तिनांह दी जे मिले, नानक की अरदास।।

शायद इसी भाव के फलस्वरूप मुझे जितने भी सन्त मिले (बहुत मिले!) वह मुझे भगवान के प्रति श्रद्धा और शास्त्र के ज्ञान एवं प्रकाश की तरफ़ एक क़दम आगे ही लेते गये, परन्तु मेरे मन में किसी भी संत के चरणों में गुरु भाव की जागृति नहीं हुई। ज़रूरत महसूस होती रही। मन में एक दृढ़ विश्वास ने जन्म लिया। "यदि पुकार सच्ची है तो एक दिन गुरु द्वार पर पहुँच जायेंगे और मेरा द्वार खटखटायेंगे! मुझ में तो सच्चे गुरु की तलाश की सामर्थ्य नहीं है।" जीवन में कई सन्त महात्माओं ने अपनी शरण में लेने के लिये हाथ बढ़ाया परन्तु मेरा एक ही उत्तर होता "गुरु स्वयं मेरे घर आयेंगे।"

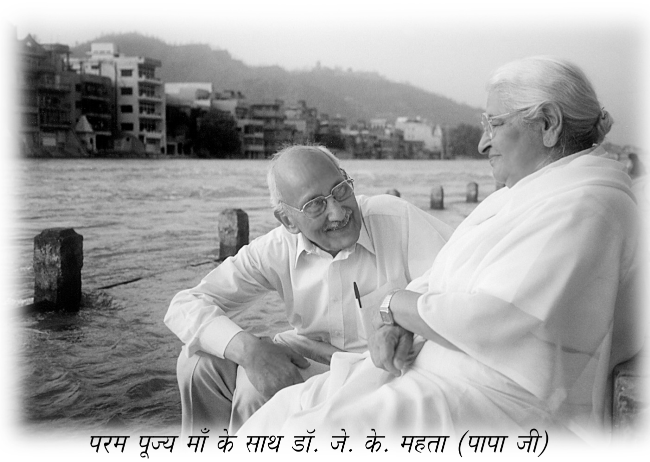

परम पूज्य माँ के साथ डॉ. जे. के. महता (पापा जी)

अभी मैंने जीवन में क़दम धरा ही था कि रमण महर्षि मेरे जीवन में आये। मैं रमण महर्षि के पास नहीं गया, उन्होंने बिन बोले, बिन परिचय पाये मुझे अपने चरणों में बुला लिया। उन को देखते ही मुझे ऐसे दीखा कि यह तो गीता की, उपनिषदों की प्रतिमा स्वयं हैं। यही सजीव, सप्राण उपनिषद् और गीता हैं जिन से यह धर्म-ग्रंथ अपना प्रमाण पाते हैं और मानवित बनते हैं। मुझे मेरा गुरु मिल गया और रमण महर्षि का चिंतन मेरे हृदय में स्थाई रूप से अंकित हो गया। अब जीवन उन्हीं के साक्षित्व में बीतने लगा। जब मैं गीता या उपनिषद् को खोलता, जो भी श्लोक सामने आता ऐसे लगता कि महर्षि रमण बोल रहे हैं। शास्त्र घूँघट पट खोल रहे हैं। उधर जीवन में भी भोगऐश्वर्य और संसार में प्रभुत्व बढ़ने लगा। आदर्श से निजी पतन ज्यों का त्यों ही बना रहा, शायद यह दृष्टि मेरे आन्तर में मेरा पतन देखकर राम को धीमे-धीमे पुकार रही थी। सच्ची पुकार कितनी भी धीमी क्यों न हो, आसुरी भावों ने उसे कितना भी क्यों न घेरा और दबाया हुआ हो, पुकार ने भगवान को पुकारा है और उन्होंने स्वयं कहा है –

"अपिचेतसु दुराचारी भजते माम् अनन्य भाव"

एक दिन ९ मार्च १९५८ को सच ही मेरे गुरु मेरे द्वार पर आ पहुँचे। यह पूज्य माँ के साथ मेरा प्रथम आध्यात्मिक सम्पर्क था। पाँच साल तक मैंने उन्हें न जाना, न पहचाना परन्तु मेरा मन मौन में उन्हें निहारता रहा। साढ़े चार साल बाद २ अक्टूबर १९६२ को मैं सहज ही पुकार उठा, "आप रमण ही तो हैं जो शरीर में मुझे दोबारा इस रूप में मिले। गीता और उपनिषदों की प्रतिमा आप ही हैं! आप ही मेरे आदर्श हैं जिन की मुझे तलाश है!"

सच्चा ज्ञान और सच्ची तुला तो मेरे पास नहीं थी। पर जो कुछ भी था मेरे स्तर पर उतर कर मेरी शास्त्रीय तुला पर तुल गये। न कुछ कहा, न कुछ बोले! ऐसा अद्भुत दर्शन जो मुझे हुआ वह अचम्भा ही था। माँ का जीवन ही ज्ञान है। सन्तगण ज्ञान हाथों से कागज़ पर नहीं, पाँव से धरती पर लिखते हैं... यानि उन का जीवन ही ज्ञान का प्रमाण है और उन के पद्चिन्ह ही अनुसरणीय हैं। एक आलोचक की दृष्टि से मुझे उन्हें देखने का पाँच साल तक लंबा अवसर मिला।

९ मार्च १९६३ को मैंने अपने परिवार सहित उन के चरणों में शेष जीवन व्यतीत करने का निश्चय कर लिया और तब से लेकर आज तक गुरु सहवास का यह अवसर ही मैं अपना सब से बड़ा सौभाग्य मानता हूँ।

जब मैं इन की शरण में आया तो मेरे पास ज्ञान भी था, ज्ञान का प्रमाण भी था पर अपने आन्तर में गुमान रुपा मलपूर्ण अंधकार का कुछ भी तो एहसास नहीं था। तब से लेकर आज तक 'मैं रुपा' मेरा जीवन और 'ब्रह्ममय' पूज्य माँ का जीवन दर्पण और उसमें अपने दर्शन साथ साथ चल रहे हैं।

कई बार सोचता हू 'ईशोपनिषद् में जो यह कहा है विद्या और अविद्या का जानना ज़रूरी है।' क्या मेरे गुरु बिन बोले, बिन कुछ भी कहे अपने और मेरे जीवन को विद्या और अविद्या की प्रतिमा रूप प्रकट कर विवेक जागृत नहीं करा रहे? सत् और असत् दोनों को जान कर फैसला तो मैंने करना है वरमाला किसे पहनाऊँ!

"धन्य गुरु मेरे आपुनो, जिन राह दियो दिखाये।"

दर्शन तोरे उतने मिलें,
जितने 'मैं' रे देख सकूँ

पिता जी - माँ, मेरे ज़हन में यह प्रश्न कई बार उठता है कि जब अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण से कहा कि युद्ध के समय जो आपने उपदेश दिया था उसे फिर से दोहराईये! तब भगवान ने उत्तर दिया कि वह उनकी स्मृति में नहीं रहा।

यदि भगवान श्री कृष्ण योगेश्वर थे तो उन्होंने ऐसी बात क्योंकर कही?

(पिता जी यहाँ पर अर्जुन की भगवान से दूसरी बार गीता सुनने की जिज्ञासा के विषय में पूछ रहे हैं।)

परम पूज्य माँ भगवान की ओर मुखरित हो कर गा उठे -

राम राम, राम राम...

तुझसे पूछूँ तेरी स्थिति, तुझपे संशय होने लगा।
देख राम आज बात सुनो, यह मन कहाँ पे खोने लगा।।

सीस नवा के पूछे मन, तेरा राज़ जानना चाहे है।
योगेश्वर तू राम कहो, काहे को कहलाये है।।

जब तूने रे अर्जुन को, गीता का उपदेश दिया।
बहु बरस पश्चात् जब, अर्जुन पूछा कहा 'भूल गया'।।

इक अक्षर नहीं रे गीता में, जो तू नहीं रे आप है।
जो जो ध्यान किया है वहाँ, अक्षरशः तू आप है।।

पूर्ण तोरा प्राक्टय, देख के मैंने देखा है।
तुला पे तुझ को तोल करी, तेरे बोल बोल को देखा है।।

कोई गुण वहाँ पे नहीं कहा, जो तोरा नहीं है आपुनो।
उस मन की नहीं बात कही, जो मन नहीं तोरा आपुनो।।

वा पाछे जो तत्व है, वह सत्त्व स्वरूप तू आप है।
आरंभ है क्या मध्यम है क्या, वा पूर्णता तू आप है।।

हर शास्त्र का प्रमाण है तू, यह तो मैंने देखा है।
अरे बार बार तुझे तोल करी, तेरे जीवन से रे देखा है।।

यह देख करी मैं कस मानूँ, तू अपना आप रे भूल गया।
अपनी बतियाँ निज मुख से, भगवन् पुनि न कह सका।।

अपना राज़ अरे राम कहो, क्या कहूँ समझावो रे।
किस मुँह से तुझे राम कहूँ, योगेश्वर कहलावो रे।।

समझ मना हाय समझ ले, प्रश्नकर्ता को जान ले।
यहाँ श्याम की बात रे नहीं नहीं, अर्जुन को पहचान ले।।

जैसी परिस्थिति रे उठी, अनुकूल ही उन ने बता दिया।
झुकाव देख हाय श्याम का, निज मुख से सब बता दिया।।

अपना घूँघट उठाये करी, इक बेरी तो दिखा दिया।
उस अर्जुन की क्या कहिये, जिस देख के भी भुला दिया।।

देख के श्याम विराट रूप, जान के वह भगवान है।
सुनी सुनी के तोली तोली, जाना वह रे राम है।।

विजय जिस पल हो गई, निज काज में खो गया।
सफ़लता कैसी देख मिली, समझा सफ़ल मैं हो गया।।

गर सत्त्व में तव रुचि होती, तो नित्य श्याम निहारता।
विजय को देख ही न पाता, भगवान को पुकारता।।

भगवन् उस को कह करी, भगवान उसको जान करी।
अनुभव से भी देख मना, राम उसी को जान करी।।

जब अपना काज रे हो ही गया, अपना राज्य रे हो ही गया।
केवल साख्य भाव रहा, और अपनी 'मैं' में खो गया।।

यह देख करी फिर वह कहे, क्या घूँघटा पुनि उठायेंगे।
सहज में झूठी बतियन् पे, जो इतना उनको चाहेंगे।।

दर आया था अर्जुन जब, संकट उसपे आन पड़ी।
विपदा से उठाने को, श्याम रे आपुनो दर्शन दी।।

वह सब त्यजी के मूढ़मति, रण से उठ कर जाता था।
कुछ करना वह न चाहे, देख वह हारे जाता था।।

सत्यता कारण ही जानो, इस विध जाये ज़लील होये।
अपने आप वह करुणामयी, यह नहीं रे देख सके।।

साथ में गर श्याम हो, निज सखा निज प्रेमी रे।
फिर भी कहें यह होये, यह नहीं रे हो सके।।

कहें हार के तुम मत जावो रे, मैंने कर तेरा थामा है।
पुकार पुकार के कहने लगे, देख तो किसने थामा है।।

जो कहूँ सो आज करो, वह न माना यह मनाते गये।
जितना जितना न माना, अरे वह दर्शन दिखाते गये।।

जब देख के आँख रे मूँद ली, जब जान के कुछ भी न जाना।
और मान के कुछ भी न माना, पहचान के जब न पहचाना।।

विजय ने सब भुला ही दिया, गर उस पल तुला वह बन जाता।
जो श्याम ने ख़ुद ही ज्ञान दिया, अर्जुन भूल ही न पाता।।

पल पल छिन छिन श्याम कर्म, वह गर तोले ही जाता।
प्रीत रे बढ़ती ही जाती, यह प्रश्न ही उठ रे न पाता।।

बेवफ़ाई की दाद दो, भगवान को देख के भूल गया।
नहीं गर वह श्याम को देखता, देखी के कौन रे भूल सका।।

गीता पुनि सुनावो रे, यह प्रश्न ही कबहुँ न उठता।
उस देखा नहीं था श्याम को, इस कारण यह प्रश्न उठा।।

गर देखे श्याम का प्राक्ट्य, तब गीता कौन रे पढ़ पाये।
उस शब्द की उपमा श्याम आप, तो शब्द में चित्त को धर पाये।।

पर उसने पूछा सहज में, बिन चाहे ही पूछ लिया।
उसको क्या वह पुनि कहें, जो देख के नहीं रे देख सका।।

समझ मना तू समझ सही, वा की करुणा देख के न देखी।
हाथ बढ़ाया श्याम ने, उसने कर वह छोड़ ही दी।।

बार बार यह घूँघटा, कबहुँ उठ नहीं पायेगा।
गर घूँघट इक बेरी उठा, जिस देखा देखे जायेगा।।

चाह कहाँ है सोच कहाँ, यह तो श्याम ने जान लिया।
इस कारण अरे अन्त में, उसे विजय मिले यही तो कहा।।

उसे श्री मिले और मान मिले, विजय मिले यह कहने लगे।
अर्जुन को ही देख करी, ही तो राम यह कहने लगे।।

नहीं ये क्योंकर रे हो सके, भगवान मिले तब ही जग मिले।
आप वह आपुनो दर्शन दे, और आपुनो ज्ञान जब आप रे दे।।

नचिकेत ने क्या रे कहा, अरे यह तो पा ही जाऊँगा।
अखंड तत्व की अब कहो, जग माँगी समय न गँवाऊँगा।।

विजय निश्चित है जाने हूँ, श्री भी आ ही जायेगी।
वह मूढ़मति होगी हे राम, जो नाहक समय गँवायेगी।।

यह जान करी यह मान करी, उस राम सों राम ही माँग लिया।
यम रूप भगवान सों, स्वरूप रे आपुनो माँग लिया।।

अर्जुन भूला राहों में, वह तो विजय ही चाहे था।
शुष्क भये थे भाव रे, वह केवल वीरता चाहे था।।

वह विजय तो चाहे था, भयभीत हुआ तो रुकने लगा।
गाण्डीव जो हाथ से छूट गया, रण सों क़दम रे उठने लगा।।

इस कारण उस सब कहा, वह श्याम नहीं अरे चाहता था।
केवल वह रे मन जानो, रण में विजय ही चाहता था।।

जब भी जब भी आँख खुले, प्रश्न की बात रे वहाँ नहीं।
आँख खोल के देख तो ले, शब्दन् की बात वहाँ नहीं।।

कौन शास्त्र उस नहीं पढ़े, तुला बनायी के तोलता।
श्याम को गर वह देखता, यह प्रश्न कभी नहीं बोलता।।

यह जान करी हाय मन कहो, अब तुझे मैं जान लूँ।
जो भूल वहाँ पे राम हुई, वही भूल अरे नहीं करूँ।।

इक बेरी जो सीस झुका के, तोरे चरण में आया हूँ।
बार बार करुणा तोरी, तुमसे राम मैं पाया हूँ।।

मेरी दृष्टि करुणा पे न टिके, सत्यता पे टिक जाये।
राम प्रेम तू आप रे है, उस प्रेम में 'मैं' यह टिक जाये।।

नहीं माँगूँ अब मान धन, तोरे प्रेम से मिल ही जायेगा।
जादूगर तूने प्रेम किया, यह तो संग निभायेगा।।

यह जान करी यह मान करी, अब तोरे चरण में सीस झुके।
स्थूल में दृष्टि नहीं नहीं, तोरी सत्यता में जाये टिके।।

यह जान करी यह मान करी, इन बतियन् में न चित्त धरूँ।
जब जब भय संकट उठें, तब तब तुमको याद करूँ।।

तू आप ही जाये संभालेगा, मिट के भी रे बचा लेगा।
गर तेरा तुझ को दे ही दिया, जिस दिया तुझे वह पा लेगा।।

विपद मिटे अनुकूल भये, तब तब मुझको भूले है।
ऐसी बात मैं नहीं करे, इक बेरी चरण जो छू ले है।।

अब न भूलूँ प्रेम तोरा, स्वरूप तोरा कबहुँ भूलूँ न।
प्रेम से तोरे आग़ोश में, आये के चरणां छू लूँ मैं।।

दर्शन तोरे उतने मिलें, जितने 'मैं' रे देख सकूँ।
उतना मत तुम देना रे, जिसको मैं न देख सकूँ।।

घूँघट आपुनो उठावो रे, यह बात यह लब कबहुँ नहीं कहें।
मोरा घूँघट उठ जाये, बार बार वह यही कहें।।

विधि न जानूँ मैं राम कहूँ राम राम—

जितनी-जितनी जीव की 'मैं' लुटती है, उससे कहीं ज़्यादा दैवी सम्पदा मिलने लगती है!

श्रीमती पम्मी महता

आहा! नये वर्ष का आग़ाज़ होते ही इबादत के लिए हाथ उठ जाते हैं और कह उठते हैं, 'मुबारक हो यह बरस पूर्ण जगती को सब ओर से!'

मंद-मंद मुसकान से मन मयूर नाच उठें और हम सभी अपने आपसे यह वादा करें, 'हे श्री हरि जगद्जननी परम पूज्य माँ! आपके ही साक्षित्व में आपके प्रति नतमस्तक होई व आपकी चरण-रज लेते हुये उसी रहगुज़र पर तहेदिल से क़दम बढ़ायें, जो हमने आपके चले क़दमों से ग्रहण किया है।

वही प्रतिपादित हो जाये व जीवन सभी प्रभुमय हो जायें! आमीन!

हे श्री हरि नाथ, अपनी रहगुज़र पर ही हमारे क़दम इस क़दर स्थिर हो जायें जो हम कर्म-वचन से, रोम-रोम से व असीम श्रद्धा व भक्ति भाव से आप ही का जीवन में अनुसरण करें! यूँ ही हे श्री हरि माँ, हम सम्पूर्ण जीव आपसे पाये सत्-मार्ग पर चलें, जैसे आपने अपने जीवन से हमें धन्य-धन्य किया हुआ है!

असीस दीजिये हमें, जो हम आपके क़दमों का सदक़ा उतारते हुये ही चल पायें। मन में कोई संशय न रहे। हर क़दम आप ही की ओर उठे, ऐसो ही अमन हुआ मन आप ही की वन्दना करता हुआ निरन्तर आपकी ओर ही चलने लगे! आन्तर की सारी भटकनाओं को शांत करी, हे दीनानाथ दिनेश, अपने पर ही केन्द्रित करे रखिये! आप ही से हम सभी करबद्ध प्रार्थना करते हैं, स्वीकार कर लीजिये!

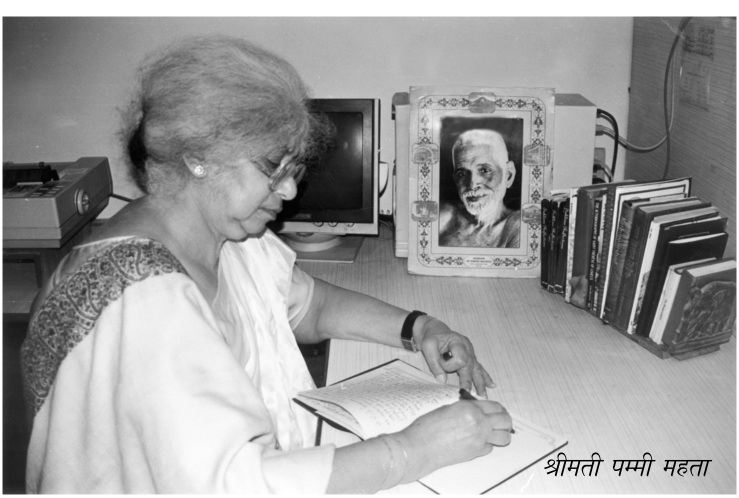

श्रीमती पम्मी महता

आपका कृपा प्रसाद ही है माँ, जितनी-जितनी जीव की 'मैं' लुटती है,

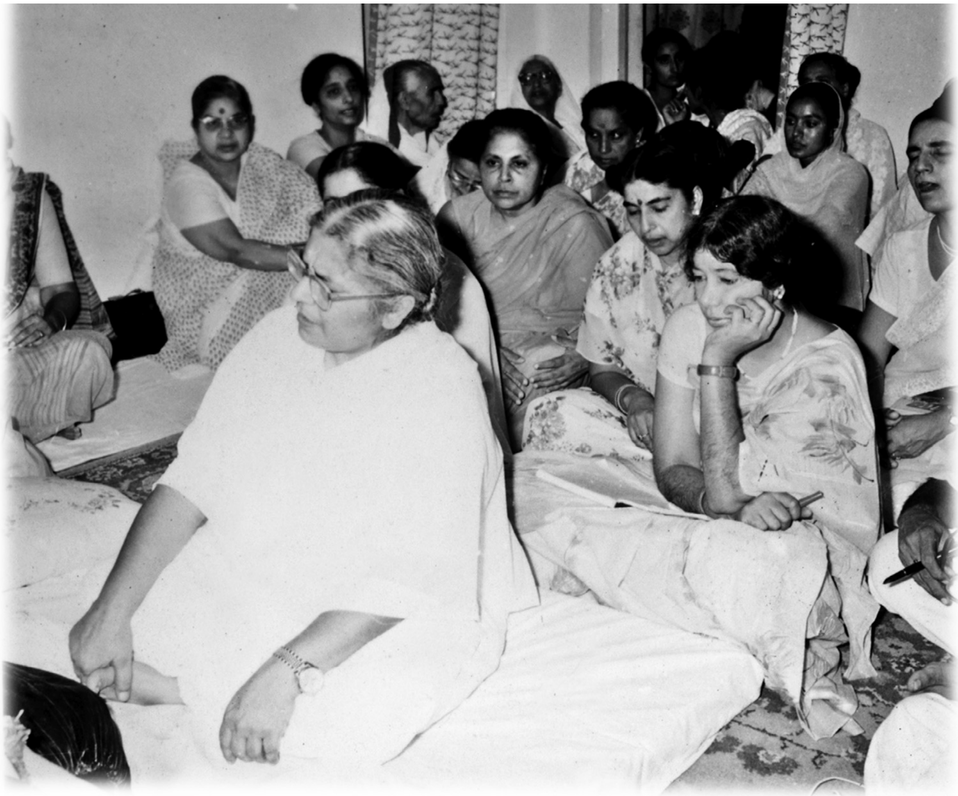

परम पूज्य माँ के साथ श्रीमती पम्मी महता एवं अन्य सदस्य

उससे कहीं ज़्यादा आप से दैवी सम्पदा मिलने लगती है! हम आप ग़रीबनवाज़ से जो नवाज़े जाने लगते हैं! आपका आपसे मिला असीम प्रेम व भरोसा कितना आत्म-विश्वास से भर देता है और उम्मीद हो जाती है कि वह दिन अब दूर नहीं... जब आंतर के अँधेरे रोशनाई में पूर्णतया परिणत हो जायेंगे। धन्य हैं आप माँ, जो आप हमें अपने से धन्य-धन्य कर रहे हैं।

अब मान लिया कि हमारा अहम् ही हमें रुलाता है व यही डुबोता भी है - कितना लज्जित महसूस होता है आंतर मन में...

हे श्री हरि नाथ, आप ही से धन्य-धन्य हुये रहें। यूँ ही आपकी कृपा हम पर बरसती रहे। जिस तमन्ना का दीप आपने हमारे हृदयों में जलाया है, उसे ही सदा-सदा के लिए प्रज्वलित रखिये! इस सम्पूर्ण जगती पर व इसके लोक कल्याण अर्थ आप इन्हीं दियों से हृदय दीप्तिमान रखियेगा। आपसे यही अनुनय-विनय है हमारी, क़बूल लीजियेगा!

आप प्रभु जी का नाम हृदयों से निरन्तर प्रवाहित होता रहे, जीवन की यही रहगुज़र को हमारे जीवन का अभिन्न अंग बना लीजिये! आप की मुहब्बत का ही इन हृदयों से

प्रवाह चले और अखियों से ढुलने लगे। यह हृदय रूपी वादियाँ आप ही आपसे भरी रहें। हरि ओऽम्।

हे श्री हरि प्रभु जी अपने बंदों पर यूँ ही करम फ़रमाईये।

आप श्री हरि माँ सदा कहते आये हैं कि जो जिस विध भी आपको पुकारता है आप वैसे ही चले आते हैं। तो आ जाईये न, श्री हरि माँ! आप आ भी जाईये! हो सकता है हमें आप को बुलाना नहीं आता हो। मगर यह भी विश्वास है आप ही हमारी हृदय की पुकार बन कर आ जाते हैं और आप ही स्वयं को बुला भी लेते हैं। ठीक ही कहा है, "करे कराये आपो आप!" ईश्वर करे उसके बाद आपका दामन कभी भी न छूटे... तभी तो अंधकार का पर्दा हमेशा के लिए उठ जायेगा। प्रकाश ही प्रकाश फैल जायेगा। आप की शुक्रगुज़ारी में व आपकी रहमत में ही बैठी हुई सारी कायनात आप में ही आ समाहित हो जाये।

देखिये न माँ! कैसी सुप्रभात उगी है... जहाँ भय नहीं, निराशा नहीं, आलस्य नहीं, कोई संशय नहीं... एक भरोसा है! विश्वास है! आस्था व श्रद्धा है! हे श्री हरि नाथ अपने प्रकाश का तेज हर आंतर में भर लीजिये! स्वयं को हृदयों के भीतर आने दीजिये। कब तक बाहर अपने दर पर हमें बिठाये रखियेगा...! गर आपको हमारी तड़प, तड़प नहीं लगती तो हमारी पुकार की भनक तो आपके कानों में पड़ रही होगी। इतनी ही मंगलयाचना क़बूल लीजियेगा! अपने दर से हमें उठाईयेगा नहीं...

आप ही आप चहूँ ओर दिखें! यह आश्वासन होगा, आप हैं न हमारे साथ! फिर कभी न कभी तो यह 'मैं' आप में जाये विलीन हो जायेगी... कितनी सुखद अनुभूति होगी! आप ही से सनाथ हुये आप ही में सदा के लिए विराम पा जायेंगे हम। कहाँ रह पायेगी यह 'मैं' मेरी...

जीवन कितने उलझ गये हैं। जब आप ही ने सभी गाँठों से मुक्ति दिलाने की बात करी है तो भला निराशा कब तक उलझाये रखेंगी हमें! मैं-मम, मोह-अहंकार व राग-द्वेष के विस्तार ने कहीं का नहीं छोड़ा हमें। आप ही ने चेताया कृपा करी! सारे आवरण उठा कर कैसे-कैसे काली को करमों वाली बना दिया!

धन्य हुये! सचमुच, धन्य-धन्य हुये हम सभी! आपके अपने हम सभी! हमारे सारे रुदन, सभी हास्य आप ही की कृपा से व आपके अनुग्रह से भर जायें। ऐसो ही हे करुणा के सागर आप आंतर मनों से प्रवाहित होई करी इन्हें अपने में विराम दे दीजिये जो हम सभी आप ही में पूर्ण विराम पा लें...!

अज्ञानता के इस गहन भँवर से निकल पाना जीव के बस की बात नहीं। यह तो आप श्री हरि माँ ही कर सकते हैं! और आपने कर भी दिखाया! सच माँ, ऐसा लगता है इस धरा पर हमें हमीं से मुक्त करने के लिए ही आप अवतरित हुये हैं। हमारी पूजा सदा आप ही के अनुग्रह में रह पाये - इस जगती को सद्‌गति दीजिये जो सत्‌युग का आगमन आने की हलकी सी दस्तक तो सुन रही है... मगर अभी खुलकर नहीं। धन्यवाद माँ! ❖

परा विद्या आसरे,
परम योगी हो जाये!

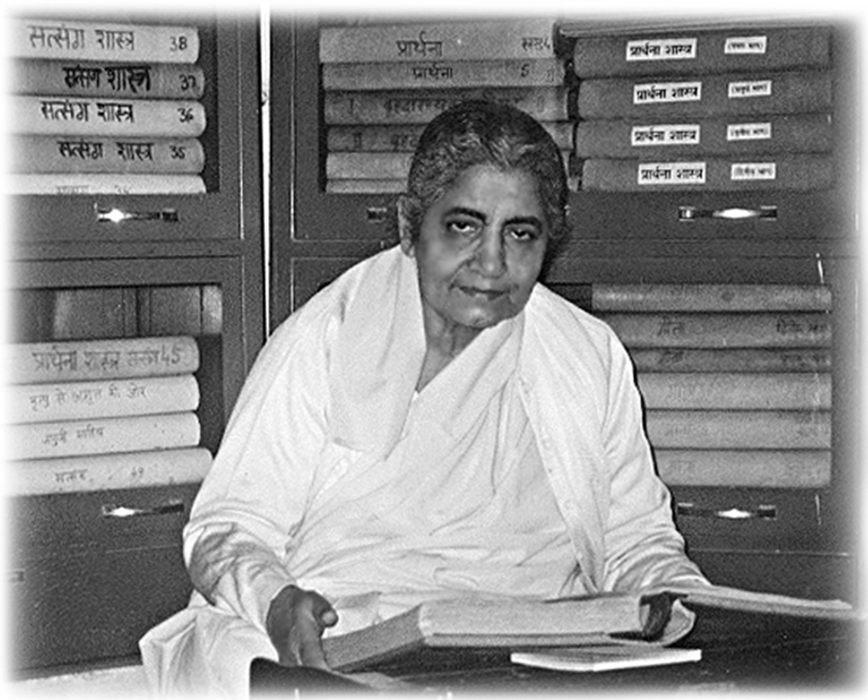

पूज्य छोटे माँ

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं
निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति। अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते।।

- मुण्डकोपनिषद्, प्रथम मुण्डक - प्रथम खण्ड, ५ श्लोक

शब्दार्थः

परा, अपरा दोनों में से ऋगवेद यजुर्वेद सामवेद तथा अथर्ववेद शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त छन्द ज्योतिष ये सब तो अपरा विद्या के अन्तर्गत हैं; तथा जिससे वह अविनाशी परब्रह्म-तत्त्व से जाना जाता है वह परा विद्या है।

तत्व विस्तारः

अपरा विद्या की कह आये, चहुँ वेद रे कह आये।
ऋक् यजुः अथर्व साम, सम्पूर्ण ही आ गये।।१।।

शिक्षा भी संग में आई, उच्चारण विधि की जो कहें।
यज्ञ विधि का ज्ञान जो दे, कल्प वेद रे जिसे कहें।।२।।

शब्द नियम का भाषा नियम, व्याकरण भी अपरा है।
शब्द सार ही जो रे कहें, शब्द अंग अपरा ही है।।३।।

निरुक्त उसे रे कहते हैं, जो शब्द का तत्व कहे।
शब्द अर्थ कुछ और हो, और और की बात कहे।।४।।

छन्द मात्रा की रे कहें, छन्द रे क्योंकर बनते हैं।
अपरा विद्या यह रे कहें, कहूँ रे क्या क्यों बनते हैं।।५।।

ज्योतिष विद्या भी जानो, अपरा ज्ञान ही होता है।
जग का ज्ञान सम्पूर्ण, अपरा ज्ञान ही होता है।।६।।

कब किस तन को क्या होगा, क्या वह कब रे पायेगा।
कौन सहायक ग्रह उसका, परिस्थिति को लायेगा।।७।।

चार वेद षष्ठ वेद अंग, अपरा ज्ञान ही कह दिया।
शब्द ज्ञान रे ज्ञान नहीं, अज्ञान ही रे कह दिया।।८।।

शब्द ज्ञान अरे श्रुति ज्ञान, वेद ज्ञान है अपरा ज्ञान।
संकेत सों जो यह कहते हैं, वह परम अनुभव है परा ज्ञान।।९।।

उपनिषद् भी सुन ले मना, अपरा में ही आते हैं।
सेतु पर इन को जानो, परम को दर्शाते हैं।।१०।।

द्वार तलक यह ले आये, फिर रे उठना ही होगा।
ज्ञान आवरण भी त्यज करके, परम मिलन अरे होगा।।११।।

अपरा में सब कह दिया, परा प्रति कुछ मौन रहे।
बाह्य स्थूल की बात नहीं, परम ज्ञान की कौन कहे।।१२।।

वेद में भी ब्रह्म ज्ञान, सम्पूर्ण ही कहते हैं।
उपनिषदन् जो पढ़ रहे, वेद अंग की कहते हैं।।१३।।

पर सार समझ ले साधक रे, शब्द ज्ञान परा ज्ञान नहीं।
सहस्र शास्त्र पढ़ी पढ़ी, पाये परम ज्ञान नहीं।।१४।।

शास्त्रन् सों रे उठ करके, अनुभव उसका होता है।
शब्दन् सों है वह परे, शास्त्र अपरा ही होता है।।१५।।

अथर्व वेद अंग ही तो, मुण्डक उपनिषद् आप ही है।
परम की बातें आप करे, पर कहे अपरा आप ही है।।१६।।

भेद परोक्ष अपरोक्ष का है, अनुभव और शब्द का है।
उच्च नीच की बात नहीं, भेद तो परम अनुभव का है।।१७।।

आत्म ज्ञान नहीं शब्द ज्ञान, शब्दन् सों वह बहु परे।
परा ज्ञान वह ही है, जो परम तक ले जाये।।१८।।

सृष्टि ज्ञान में भी जानो, शब्द ज्ञान समाहित है।
अपरा विद्या में कहें, बाह्य ज्ञान प्रवाहित है।।१९।।

आत्म अनात्म की कहें, परा अपरा ज्ञान है।
प्रकृति पुरुष दोनों का, जान लो यह ही नाम है।।२०।।

श्रेय पथ अनुगामी जानो, परा विद्या ध्याते हैं।
प्रेय पथ अनुयायी जन रे, अपरा में रह जाते हैं।।२१।।

परम ज्ञान है परा ज्ञान, अपरा प्रकृति विधान है।
स्थूल जग जो रच चुका, अपरा उसका ज्ञान है।।२२।।

शब्द बधित जो हो न सके, उसको बाँध ही को' पाये।
अचिन्त्य रूप वह परम ब्रह्म, चिन्तन में भी न आये।।२३।।

अखण्ड रस की जो कहें, सत्त्व ओर जो ले जाये।
परा ज्ञान परा विद्या, वह ही तो रे कहलाये।।२४।।

प्रकाश रूप सत्य स्वरूप, अक्षर ब्रह्म को दिखलाये।
परम तत्व परम चेतन, परम ब्रह्म को दर्शाये।।२५।।

अव्यय सत्त्व स्वयंभू, मौन स्वरूप को दर्शाये।
शिव रूप अद्वैत तत्व, मौन स्थित जो करवाये।।२६।।

परा विद्या वह ही है, अनित्य नित्य पृथक् करे।
ज्ञान अज्ञान को देख ज़रा, इक पल में ही पृथक् करे।।२७।।

इक अनित्य को दर्शाये, इक अनित्य की बतलाये।
इक ध्याये क्षणिक पाये, इक स्वरूप तक ले जाये।।२८।।

याद रहे यह दोनों ही, मायिक माया में रे हैं।
स्थूल सूक्ष्म कारण सब, साधक माया में रे हैं।।२९।।

सूक्ष्म जीव रे होता है, अपरा स्थूल को तुम कह लो।
पराकारण को साधक रे, इक पल तुम ही रे कह लो।।३०।।

परा विद्या कारण तक, साधक को ले जाती है।
अपरा विद्या जिसे कहें, स्थूल तत्व दर्शाती है।।३१।।

इक समाधि दिलवा दे, इक वृक्ष फल दिलवा दे।
इक ईश्वर तक ले जाये, दूजी विश्व रे दिलवा दे।।३२।।

अपरा अन्नमय में है, तनो व्यवस्था दिलवा दे।
बाह्य-प्रज्ञ रे जीव भये, स्थूल व्यवस्था बनवा दे।।३३।।

परा विद्या श्रेय पथ रे है, कारण का वह ज्ञान रे दे।
सूक्ष्म जीव अपरा ध्याये, महा भोगी देख भये।।३४।।

बाह्य-प्रज्ञ जिस पल रे भये, महा भोगी रे हो जाये।
परा विद्या आसरे, परम योगी हो जाये।।३५।।

कारण तक वह ले जाये, हृदय लोक को वह पाये।
संस्कार हैं जहाँ पड़ें, सत्त्व यहीं पर दर्शाये।।३६।।

जीव भाव भोगी पक्षी, भोगी भये या योगी भये।
द्वौ विद्या के आसरे, यह भये या वह रे भये।।३७।।

कहें दोनों को जान ले, परम सत्त्व को जान ले।
नित्य को भी जान ले, अनित्य को भी जान ले।।३८।।

याद रहे यह साधक रे, परम तो इनसों है परे।
वह ही उसको पा सके, जो अपरा परा से उठ जाये।।३९।।

तैजस जीव को कहते हैं, जग ध्याये उसे विश्व मिले।
परम ध्याये परा ध्याये, प्रज्ञा जागृत हो जाये।।४०।।

इक ओर बाह्य लोक मिले, दूजे द्यू लोक को पा जाये।
इक ओर इन्द्रिय जग पाये, दूजे हृदय में आ जाये।।४१।।

वेदन् की वह बात कहें, बाह्य लोक की सब कहें।
पूर्णरूपेण की रे वह, स्थूल लोक की सब कहें।।४२।।

वेदान्त में देख ज़रा, परा विद्या की कहते हैं।
उपनिषदन् में देख ज़रा, परम परे की कहते हैं।।४३।।

२४-८-६१

...जो श्रद्धावान होगा,
वह सत्यपरायण होगा ही!

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा।।

श्रीमद्भगवद्गीता ४/३७

यहाँ भगवान कहते हैं कि :

शब्दार्थ :

१. अर्जुन! जैसे प्रज्वलित अग्न ईंधन को भस्मीभूत कर देती है

२. वैसे ही, ज्ञान अग्न सम्पूर्ण कर्मों को भस्म कर देती है।

तत्व विस्तार :

नन्हीं! ज्ञान से जीव क्या जानता है, पहले इसे फिर से समझ ले। तत्वदर्शी से वह जो नित्य ज्ञान पायेगा, उससे वह यही सीखेगा कि :

१. तू आत्मा है तन नहीं।

२. तन के कर्म भी तुम्हारे नहीं हैं, आत्मा

तो नित्य अकर्ता है।

३. सम्पूर्ण कर्म प्रकृति द्वारा रचित हैं, मन के गुण भी प्रकृति द्वारा रचित हैं।
४. प्रकृति की रचना, रूप, गुण, स्वतः ही जीव के तन को कर्मों में प्रेरित करते रहते हैं और गुण गुणों में वर्तते हैं।

यह सब साधक पहले मानो अपने ही गुरु के पास रह कर, उसे प्रणिपात करता हुआ, उसकी सेवा करता हुआ देख रहा था। जो बात उसे समझ नहीं आती थी, वह उस आत्मवान से पूछ लेता था।

१. वह साधक, तत्वदर्शी आत्मवान के जीवन में ज्ञान का रूप देख चुका है।
२. वह आत्मवान को अपने तन के प्रति नित्य उदासीन देख चुका है।
३. वह अपने आत्मवान गुरु का अपने तन के प्रति नित्य मौन देख चुका है।
४. वह अपने गुरु को अपने मान को ठुकराते हुए देख चुका है।
५. वह उस परम ज्ञानी को मूर्खों के पास झुकते हुए भी देख चुका है।
६. वह उस आत्मवान को कर्तव्य निभाते हुए देख चुका है।
७. वह अपने गुरु को शरणागत को सहारा देते हुए देख चुका है।
८. वह उस आत्मवान गुरु को अपने आपको दूसरों के लिये मिटाते हुए देख चुका है।

नन्हीं! वह साधक, जो श्रद्धापूर्ण दृष्टि से नतमस्तक हुआ, नित्य आत्मवान की सेवा करते हुए परिप्रश्न करता रहा हो, वह अध्यात्म का परिणाम सामने देख चुका है। तब उसके लिये आत्मवान बनना थोड़ा आसान हो जाता है। जब वह आत्मा में तीव्र लग्न की अग्न जला लेता है :

क) उसके कर्म भस्मीभूत होने लगते हैं।
ख) उसकी सम्पूर्ण मान्यतायें समाप्त होने लगती हैं।

क्योंकि, उसका अपने ही तन से संग भस्म होने लगता है। वह जानता है कि रेखा ही तन के जीवन को बनाये रखती है, तन उसी के अनुसार विभिन्न परिस्थितियों में से निकलता है और उनमें कार्य कर्म करता रहता है। किन्तु ज्ञान रूपा विवेक के जागृत हो जाने के कारण वह आत्मवान उस तन तथा तनो रेखा से लिपायमान नहीं होता।

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
तत् स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।।

श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

अब भगवान कहते हैं, कि हे अर्जुन :

शब्दार्थ :

१. इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला और कुछ भी नहीं है।
२. योग से सिद्ध हुआ पुरुष,
३. कुछ समय पाकर,
४. अपने में ही योग संसिद्धि अनुभव करता है।

तत्व विस्तार :

मेरी नन्हीं योग अभिलाषिणी आभा! अब भगवान कहते हैं कि निःसन्देह इस संसार में ज्ञान के सदृश पावन करने वाला कुछ भी नहीं है।

भगवान ने यह क्यों कहा, पुनः समझ ले :

क) ज्ञान ही अज्ञान का नाश कर सकता है।
ख) ज्ञान ही अज्ञान को दूर करके ज्ञान में परिणत कर सकता है।
ग) ज्ञान ही आसक्ति रूपा असत् को मिटा सकता है।
घ) ज्ञान ही मोह रूपा पाप की जड़ को मिटा सकता है।
ङ) ज्ञान ही सकामी को निष्काम-रूप बना सकता है।
च) ज्ञान ही मनोमल को धो सकता है।
छ) ज्ञान ही तनत्व भाव रूपा मिथ्यात्व को मिटा सकता है।
ज) ज्ञान ही 'मैं तन हूँ' के अहंकार को मिटा सकता है।
झ) ज्ञान ही जीव को भगवान बना सकता है।

तुम ही बताओ इस ज्ञान से श्रेष्ठ क्या होगा? यह पावन करने वाला है, यह पावनता ही है। अब भगवान कहते हैं कि योग सिद्धि पाया हुआ पुरुष, कुछ समय पाकर योग सिद्धि का अनुभव करता है।

नन्हीं!

१. आत्मवान की दिनचर्या, साधारण विधि से ही चलती रहती है।
२. योग में स्थित होने के पश्चात् आत्मवान को अपने ही जीवन में योग स्थित के प्रमाण मिलने लगते हैं।
३. किन्तु स्थिति की परिपक्वता का प्रमाण मिलते हुए समय लगता है। एक दिन मौन रहना आसान है; यदि कुछ काल तक निरन्तर मौन रह सकें, तो ही 'मौन' रहने का प्रमाण मिल सकता है।
४. कुछ दिन के लिये अपने तन के प्रति उदासीनवत् रहना आसान है, कुछ काल तक निरन्तर उदासीनवत् रहें तो जानें कि निरन्तर उदासीनता क्या है?
५. कुछ पल के लिये अपमान सहना आसान है, निरन्तर मान अपमान के प्रति उदासीन रहें, तब समत्व में स्थिति का अनुभव होता है।

अनुभव, स्थिति हो जाने के पश्चात् होता है और अपने ही प्रमाण से होता है। अनुभव तब होता है जब अपने ही तनत्व भाव का अभाव अपने ही जीवन में प्रमाणित हो।

नन्हीं! यह प्रमाण कुछ काल में मिलता है। वास्तव में जब तक उसके अपने ही सहज जीवन में उसे अनुभव न हो जाये, तब तक आत्मवान मौन ही रहते हैं। वे जग में जाकर किसी को ज्ञान नहीं देते।

श्रद्धावांल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।।

श्रीमद्भगवद्गीता ४/३९

अब भगवान उस श्रेष्ठ साधक के गुण कहते हैं, जो ज्ञान पाकर परम शान्ति को पाते है :

शब्दार्थ :

१. श्रद्धावान, तत्पर, जितेन्द्रिय पुरुष, ज्ञान को पाते हैं।

२. **ज्ञान को प्राप्त होकर वे शीघ्र ही परम शान्ति को प्राप्त होते हैं।**

तत्व विस्तार :

नन्हीं लाडली जान्! अब भगवान परम शान्ति को पाने वाले साधक के गुण कहते हैं। उसे 'श्रद्धावान, तत्पर तथा जितेन्द्रिय' होना चाहिये, तब वह शान्ति पा सकता है।

श्रद्धा :

श्रद्धा का अर्थ है :

१. भक्तिपूर्ण, अगाध विश्वास।
२. उच्च और पूज्य भाव।
३. दृढ़ निष्ठा का होना।
४. किसी से पूर्ण रूप से प्रेम करना।
५. किसी गुण से इतनी लग्न हो जाना, कि उसको अपने जीवन में लाने के लिये, जीव पूर्ण परिश्रम करने को तैयार हो।
६. सम्मान तथा प्रबल उत्कृष्ट निष्ठा या आस्था।

अब नन्हीं! यह समझ ले कि श्रद्धावान जीवन में क्या करेगा? अपने श्रद्धास्पद को पाने के लिये वहः

क) कोई भी परिश्रम करने के लिये तैयार होगा।
ख) कोई भी कष्ट उठाने को तैयार होगा।
ग) संसार के किसी भी विषय को त्यागने अथवा अपनाने के लिये तैयार होगा।

१. महान दुःख भी सहने को तैयार होगा।
२. मान-अपमान की परवाह नहीं करेगा।
३. लोक-लाज की परवाह नहीं करेगा।
४. स्वयं निरन्तर प्रयत्न करेगा।
५. अपने श्रद्धास्पद का दृष्टिकोण अपनाने के लिये ज्ञान पाने का यत्न करेगा।
६. जिन गुणों में श्रद्धा है, उन्हें अपने में लाने के यत्न करेगा।
७. अपने श्रद्धास्पद को रिझायेगा तथा मनायेगा।

कृष्ण में श्रद्धापूर्ण का मानसिक दृष्टिकोण :

अब नन्हीं! यह समझ! यदि भगवान श्री कृष्ण में श्रद्धा होगी तो उनके सच्चे भक्त का क्या दृष्टिकोण होगा और वह क्या क्या करने के लिये तैयार होगा?

क) वह अपना पूर्ण जीवन उन पर अर्पित करने के लिये तैयार होगा।
ख) अपनी हर ख़ुशी, चाहना, मान, बल्कि अपना सर्वस्व तक उन पर अर्पित करने को तैयार होगा।
ग) अपनी मान्यतायें उन पर अर्पित करने को तैयार होगा।
घ) उनके लिये संसार में छोटे से छोटे काम करने को तैयार होगा और न्यून कार्य का बीड़ा भी उठाने को तैयार होगा।
ङ) उनके लिये जीवन भर बेख़ुदी में रहने के लिये तैयार होगा।
च) उनके लिये संसार में जीवन भर तड़पता रहने के लिये तैयार होगा।
छ) उनके लिये जीवन भर भिखारी बन कर रहने को तैयार होगा।
ज) उनके लिये जीवन भर राजा बन कर रहने को तैयार होगा।
झ) उनके लिये जीवन भर अपने प्राण न्योछावर करने को तैयार होगा।
ञ) उनके लिये जीवन भर जीते हुए भी मृतक के समान रहने को तैयार होगा।

कृष्ण में श्रद्धा रखने वाले का गीता के प्रति दृष्टिकोण :

१. गीता भगवान कृष्ण का आदेश है,

उपदेश नहीं।

२. गीता कृष्ण की आज्ञा है।
३. गीता कृष्ण के पद अनुसरण की विधि है, जो भगवान ने स्वयं कही है।
४. गीता भगवान कृष्ण के मुखारविन्द से कही हुई जीवन में अनुष्ठान करने की प्रणाली है।
५. गीता श्रीकृष्ण में श्रद्धा रखने वाले के जीवन में अनुसरणीय विवरण है।
६. गीता साधक के लिये साक्षात् भगवान की वाणी है और गीता की प्रतिमा बनना ही उसका धर्म हो जाता है। इसी कारण, साधक के लिये गीता का एक-एक वाक् मन्त्र होता है और वह उसे सुनते ही पल में वही रूप धर लेता है।

तत्पर :

१. तत्पर से अर्थ, 'भगवान के परायण' समझना चाहिये।
२. तत्पर से अर्थ है, भगवान के शरणागत।
३. भगवान को ही सर्वोत्तम ज्ञातव्य मानने वाले को 'तत्पर' कहते हैं।
४. भगवान में आश्रय लिये हुए, तथा भगवान में अगाध श्रद्धा रखने वाले को तत्पर कहते हैं।
५. ऐसा जीव भगवान के ही कार्य-विशेष में लगा हुआ होता है।
६. वह भगवान के लिये ही जीवन व्यतीत करने वाला होता है।
७. वह जीवन में परम गुणों के परायण होता है।
८. उसकी परम गुणों से प्रगाढ़ आसक्ति है। वह जीवन में सब कुछ भगवान के गुणों पर छोड़ देता है।
९. वह भगवान का अनुसरण करता है।

तत्परता का अर्थ है, जीवन में भगवान के गुणों का आसरा लेना।

अब नन्हीं! यह समझ ले कि जो श्रद्धावान होगा, वह सत्यपरायण होगा ही। भगवान में श्रद्धा हो और फिर जीव उनके परायण हो, तब तो वह :

क) निरासक्ति और निःसंगता का व्रत धारण कर ही लेगा।
ख) निष्काम भाव से कर्म करने का व्रत धारण कर ही लेगा।
ग) अपने तन का दान दे ही देगा।
घ) जीवन को यज्ञमय बनाने का व्रत धारण कर ही लेगा।
ङ) अपनी सम्पूर्ण मान्यताओं को पल में छोड़ ही देगा।
च) अपनी सम्पूर्ण कामनाओं को पल में छोड़ ही देगा।
छ) अपने प्रति नित्य उदासीन हो ही जायेगा।
ज) सम्पूर्ण इन्द्रियाँ अपने वश में कर ही लेगा, क्योंकि वह भी तो भगवान की सेवा में लग जायेंगी।

संयतेन्द्रिय :

संयतेन्द्रिय का अर्थ है :

१. जिसकी इन्द्रियाँ उसके वश में हैं।
२. इन्द्रियों को नियमबद्ध करना।
३. जिसकी इन्द्रियाँ उसके पराधीन हों।
४. जो अपनी इन्द्रियों पर अंकुश लगाये हुए हो।
५. जो अपनी इन्द्रियों को श्रेय पथ की ओर ले जाता है।
६. जो अपनी इन्द्रियों का संयोग मन से न रख कर, बुद्धि से रखता हो।

मेरी आत्म स्वरूप नन्हीं रूप! भगवान कहते हैं, ऐसे लोग, यानि श्रद्धावान, सत्यपरायण तथा संयतेन्द्रिय पुरुष ही ज्ञान को पाते हैं। जब वे यह ज्ञान पा लेते हैं, तत्पश्चात् वे शीघ्र ही शान्ति को पा लेते हैं। ❖

जिज्ञासा बनी रहती,
आप माँ मुझे बतायेंगे ज़रूर...

श्रीमती पम्मी महता

परम पूज्य माँ के साथ श्रीमती पम्मी महता एवं अन्य सदस्य

हे श्री हरि जगद्जननी माँ, जिस मन को आप ही ने अपना लिया... उस पर आपकी इस अपार कृपा व असीम अनुग्रह के लिए कोटि-कोटि धन्यवाद! हे नाथ, किसी तरह भी इसे पुनः मैला नहीं होने दीजियेगा। कितने युगों के बाद इस आन्तर मन को आपने अपने क़दमों से नवाज़ा है...!

आपके इन्हीं क़दमों को ही इस क़दर पूजूँ कि आप लौट के न जायें, ऐसो ही असीस दिये रहना! मेरे इस जीवन में न जाने कितने युगों के बाद आप पधारे हैं। पल-पल आपके

चरणां पखार पाऊँ! आप ही की करुण-कृपा से धन्य धन्य महसूस करते हुये इन्हें ही जीवन में धारण कर पाऊँ! आमीन।

आज अपने माता पिता की याद आ रही है। कितने सरल स्वभाव के थे... प्यार ही प्यार हृदयों में भरा रहता था! आप श्री हरि माँ को, आप परम पूजनीय माँ को मिलने से पहले, भगवान का नाम इतना ही जानते थे, 'कुछ भी बुरा न करना कभी, क्योंकि आप सभी जो भी करते हो उसे भगवान जी देखते हैं।' इसी सत्यता में सहज ही सभी जीते थे। अतिथि सेवा ही देखी थी घर में। हर एक का आदर था, सभी सम्मानित होते थे वहाँ! यही सरल सा धर्म था।

गायत्री मंत्र का पूजन ही हर शुभ अवसर पर होता था! सभी मिलकर फिर प्रभु जी की आरती गाते, इतनी ही हमरी पूजा थी।

सगे-सम्बन्धी निरन्तर आते... उस घर के द्वार सदा सभी के लिए खुले रहते। सभी सम्बन्धी जुड़े ही रहते। इतनी ही पूजा उन सरल हृदयों में थीं। इसे जो भी कहें, जो भी नाम दें! यही प्रेमपूर्ण वर्तन उस घर की रीत थी। अपने लिए कुछ रहे न रहे, दूजे को देने की ही परम्परा वहाँ थी। सभी के लिए स्वागत का भाव था! हँसता-खेलता जीवन था! घर में हर पल कहकहे से गूँजते रहते... ऐसे ही प्यारे भाव भावना वाला, ऐसो ही हमारा कुल था। यही सीख मिली थी माँ बाप से कि सभी के साथ सब कुछ बाँट लो। यही जीवन-दर्शन की धरोहर मिली थी हमें!

कहते नहीं थे... अपने जीवन राही बताते थे! 'बिलकुल ख़ामोशी से बाँटते चलो। ख़ुद चाहे भूखे रह लो मगर जो भी आये उनका स्वागत करो! इसी तरह बाँटने की आदत हो जायेगी। जो भी कमाओ, उसमें से एक टका (एक रुपये का सोलहवाँ हिस्सा) देने की आदत डाल लोगे तो कभी भी जीवन में न होने का एहसास नहीं होगा।' और इस प्रकार ही न कभी अच्छे बुरे के भाव पनपने दिये।

इसी सीख में, जब हे श्री हरि माँ आप से मिली, तो आपने कहा कि मैं कुछ नहीं करती! बहुत ताज्जुब हुआ! 'कैसे मैं नहीं करती...?' मन ही मन सोचा तो लगा, 'यह कैसे हो सकता है?' आप तो जानो, मेरे मन की भांप गये! हम सभी अच्छा करते हैं इसमें कोई शुभा नहीं था। मगर आपने जब सत्यता की दस्तक दी मन में, तो पता चला कि 'मैं कर्त्ता हूँ' यही गुमान की परिभाषा है। बहुत ही हैरतज़दा हो गई!

ऐसे तो कभी नहीं सोचा था कि करण कारण भगवान हैं! तभी लगा कि मेरे माता-पिता पर दुःख के पहाड़ आये... कितने समर्पित जीवन थे इनके! फिर भी लोग बुरा-भला कहने व कलंक लगाने से नहीं चूके। हमने कभी नहीं देखा था उन्हें गिला-शिकवा व कोई शिकायत करते हुए! बस सभी के लिए करना ही करना है क्योंकि सभी अपने हैं - यही भाव रहता था। आप परम पूज्य माँ का यह कहना कि 'सभी भगवान करते हैं' इसी लिए यह सुनकर मुझे बहुत ही

पीड़ा हुई थी तब... क्योंकि मैंने आपको मन से क़बूल कर लिया था, आपको अपना इष्ट भी माना व परम पूज्य भी!

मेरा इसलिए कुछ भी कहना बनता नहीं था। बस इतना अवश्य यक़ीन था कि आप विस्तार में मुझे सभी समझा देंगे। तब ही मन में संशय न हो कर आप माँ को हृदय से ग्रहण कर पाऊँगी। वैसे तो यह विश्वास उन २१ दिनों में ही हो गया था, जब मैं आप के पास आई और आपके साथ घनिष्ठ सम्पर्क में रही कि आप किस क़दर विलक्षण हैं।

आपकी सोच बहुत असाधारण है और दिल को छू लेने वाली है। कोई भी इसे हम जैसा झुठला नहीं सकता! इसलिए उसे दिल पे उतार लेती या कापी के पन्नों पर उकेर भी लेती। आपके पास वह २१ दिन रहने के बाद मेरे मन में आपने श्रद्धा के बीज डाल दिये थे इसलिए संशय की कोई गुंजाइश नहीं रही थी...!!

मेरे लिए आपकी आध्यात्मिक भाषा समझ पाना सहज नहीं था। हाँ, एक बात ज़रूर थी, जब भी आप कुछ कहतीं वह मेरे ज़हन में उतर ज़रूर जाती और मैं उसमें निहित उत्तर अवश्य तलाशती रहती। जिज्ञासा बनी रहती आप माँ मुझे बतायेंगे ज़रूर... इस तरह आपने मुझमें अपने प्रति आस्था भर दी! बहुत आभारी हूँ हे श्री हरि माँ आपकी, इस निमानी को आपने क़बूल कर लिया!

हे माँ! बहुत बहुत बहुत ही शुक्रिया...

आपका मेरे जीवन में आने के लिए!

धन्य-धन्य करने के लिए मुझे!

अध्यात्म पथ की अनन्त डगर का हर पहलू में अवलोकन करवाने के लिए...

बहुत भाग्यशाली हूँ माँ, युगों से जो आप मेरे लिए चले आ रहे हैं! आपने अपने में समाहित करने के लिए यह बहुत ही अनुपम व अनूठा, अपने दिव्य जीवन का प्रसाद मेरे हृदय-दामन में भरना क्या शुरु किया... भरते ही चले जा रहे हैं! मेरे हृदय दामन को आप कैसे-कैसे विस्तार दिये चले जा रहे हैं! बहुत ही कृतज्ञ भाव से हे करुणाकर, आपको कोटि-कोटि प्रणाम देते हुये आपकी चरण-रज सीस चढ़ाती हूँ।

अपने श्रद्धा-सुमन आप श्री हरि के श्री चरणन् में धर रही हूँ व अपने मातु-पितु का धन्यवाद भी कर रही हूँ। आप ही के साक्षित्व में दुआ करती हूँ आपमें जा पूर्णतया विलीन होने का आशीर्वाद पा जाऊँ - हरि ओऽम्

अपने जन्म दिन को यही उपहार आप श्री हरि माँ के श्री चरणन् में धरती हूँ।......

आप ही की पम्मी

२०.१२.२०१५

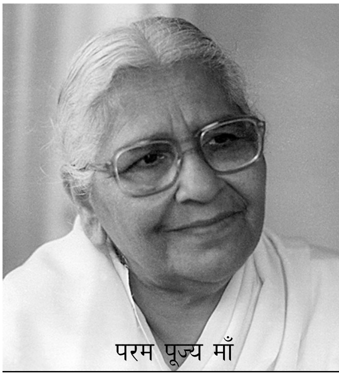

परम पूज्य माँ

अर्पणा
समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
मार्च २०१६

इस दिव्य स्थल से...

रत्ती अंकल के जीवन से कुछ यादगार पल

२१ नवम्बर २०१५ को अर्पणा, मधुबन, करनाल में, हमारे प्यारे श्री रतन मोहन सबरवाल के लिए एक स्मारक सभा का आयोजन किया गया। अर्पणा के पूर्व कार्यकारी निर्देशक होने के साथ-साथ उन्होंने अर्पणा की सेवा गतिविधियों के उत्थान के लिए, विशेष रूप से अर्पणा अस्पताल, गाँवों में स्वास्थ्य एवं विकास सेवाओं के लिए और झुग्गी झोंपड़ी के शैक्षिक कार्यक्रमों में निर्णायक भूमिका निभाई।

लेकिन सबसे अधिक उन्हें 'रत्ती अंकल' के रूप में याद किया जाता है... एक असाधारण इनसान, जो दूसरे के तद्‌रूप हो कर उसके लिए यथासंभव सब करते थे।

अपने सद्‌गुरु, परम पूज्य माँ के प्रति अगाध प्रेम एवं समर्पण की भावना रखते हुए वह अपने जीवन की सभी उपलब्धियों का पूर्ण श्रेय उन्हें ही देते थे।

हम रत्ती अंकल की इस अत्यन्त उपयुक्त श्रदाँजलि की प्रस्तुति के लिए डॉ. इला आनन्द, निरती वैद एवं वेदिका आनन्द के अथक प्रयास का धन्यवाद करते हैं।

क्रिसमस उत्सव

सेंट थेरेसा कॉन्वेंट करनाल से ननज़ और अन्य सदस्य क्रिसमस के समय अर्पणा परिवार के साथ क्रिसमस गीत गाने आये। ख़ुशी के माहौल में आपस में मिठाईयाँ भी बाँटी गईं।

क्रिसमस उत्सव को मनाने में और भी उमंग बढ़ गई जब मनदीप सिंह के १० कॉन्वेंट के छात्रों ने अर्पणा परिवार, अपने माता-पिता एवं मेहमानो के साथ मिलकर जीवन में आई दिव्यता को ख़ूबसूरती से पेश किया।

विश्व पुस्तक मेले में अर्पणा

९-१७ जनवरी २०१६ तक अर्पणा ने नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित विश्व पुस्तक मेले में भाग लिया। परम पूज्य माँ के शब्द, छोटी पुस्तिकाओं, बुक मार्कस एवं चित्रों के रूप में बड़ी उत्सुकता से ख़रीदे गये। 'एकता चित्र' (Unity picture) जिसमें सभी धर्मों का सार है, की भी ख़ूब सराहना हुई। अर्पणा प्रकाशन श्रीमद्‌भगवद्‌गीता (भगवत् बाँसुरी में जीवन धुन) अंग्रेज़ी और हिन्दी दोनों भाषाओं में, जो हमारे दैनिक जीवन में एक निर्देश के रूप में है, की भी बहुत माँग रही।

दिल्ली की घटनायें

सोनालिका सामाजिक विकास सोसायटी द्वारा छात्रवृत्ति

सोनालिका समूह द्वारा आयोजित क्रिसमस का उत्सव मनाने के लिये Shangrila Hotel में अर्पणा के शैक्षिक कार्यक्रम की २१ मेहनती एवं मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति से सम्मानित किया गया। प्रथम १० लड़कियों को श्री विजय सांपला, समाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण के केन्द्रीय राज्य मन्त्री द्वारा, जबकि बाक़ी लड़कियों को महामहिम श्रीमती बेलिंडा ओमिनो, उप उच्चायुक्त, केन्या, और महामहिम श्री मैक्सवैल रंगा, ज़िम्बाब्वे गणराज्य दूतावास के राजदूत, ने सम्मानित किया।

सोनालिका ग्रुप के उप चेयरमैन, ए. एस. मित्तल ने, अर्पणा ट्रस्ट को, ग़रीब बच्चों के लाभ के लिए चलाये जा रहे मोलरबन्द में झुग्गी झोंपड़ी के शिक्षा कार्यक्रम के लिये एक विशेष सराहना पत्र भेंट किया।

सोनालिका ट्रैक्टर्ज़ की सुश्री लोपाप्रियदर्शिनी ने अर्पणा के कार्यक्रम की मेधावी छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रस्तुत की

पूर्व छात्रों से मेल-जोल

पूर्व छात्र

अर्पणा द्वारा २४ दिसम्बर २०१५ को, एक पूर्व छात्रों का मेल-जोल कार्यक्रम, श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा के कार्यकारी निर्देशक, एवं एनआरआई श्री नमन दयाल, अर्पणा कनाडा के एक संस्थापक सदस्य, की उपस्थिति में आयोजित किया गया।

श्री करण सिंह, जो एक दिहाड़ी मजदूर का बेटा है, ने अपनी कहानी सुनाई। अर्पणा से १२वीं कक्षा पूरी करने के बाद उसे कम्प्यूटर संस्थान में चपरासी के रूप में नौकरी मिल गई। काम करते हुए उसने अपनी कम्प्युटर शिक्षा और स्नातक स्तर की पढ़ाई जारी रखी। करण अब एक अपनी ही मीडिया कम्पनी चलाता है - एक्टिव मीडिया - और उसके पास १० कर्मचारी हैं।

पूर्व छात्र सुरेन्दर ने, अर्पणा की सांस्कृतिक निर्देशक, जानी-मानी अभिनेत्री सुषमा सेठ द्वारा परामर्श पाकर एक झुग्गी के बच्चे से नैशनल जियोग्राफिक चैनल के एक कार्यकारी बनने तक की अपनी यात्रा के विषय में बताया। वह थियेटर में भी नियमित रूप से काम करता है।

अन्य छात्रों ने भी स्वयं के विषय में बताते हुए ख़ुशी से अपने अनुभवों को सबके साथ बाँटा।

अर्पणा अपने शैक्षिक कार्यकर्मों में सहयोग के लिए केयरिंग हैण्ड फॉर चिल्ड्रन, एस्सेल फाउंडेशन एवं अवीवा प्रा. लि. का अत्यन्त आभारी है।

हरियाणा के मुख्य विषय

अंतर्राष्ट्रीय विकलांगता दिवस

२९ नवम्बर २०१५ को कैरवाली गाँव में अर्पणा के विकलांग कार्यक्रम की उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया। ५५ गाँवों में ८९५ विकलांग व्यक्तियों ने ४२ समूहों का गठन किया है जहाँ उन्हें आत्म सम्मान से, सक्षम कौशल एवं निजी कमाई कर पाने वाले व्यवसायों के लिए प्रेरित किया जाता है।

श्रीमती संतोष आर्य, मुख्य अतिथि, ने घरोंडा में सर्व शिक्षा आर्य (विकलांग लोगों के लिए सरकारी स्कूल) की सुविधाओं के विषय में बताया और माता-पिता को अपने अलग ढंग से योग्य बच्चों को वहाँ भेजने के लिए प्रेरित किया जिससे वे वहाँ प्राप्त लाभों को हासिल कर सकें।

अर्पणा कार्यकर्ताओं द्वारा एक नाटक प्रस्तुत किया गया जहाँ अलग ढंग से विकसित लोगों के जीवन में सुधार का चित्रण किया गया। अर्पणा ने सहायक उपकरण एवं ४ व्यक्तियों को हाथ संचालित तिपहिया साईकिलें भी दीं। ६५ अलग ढंग से विकलांग स्कूल जाने वाले बच्चों को, प्रोत्साहित करते हुए उनका पढ़ाई पर ध्यान केन्द्रित करने एवं एक ख़ुशहाल जीवन जीने के लिए पुरस्कार वितरित किये गये। अलग ढंग से विकसित बच्चों के सशक्तिकरण के लिए खेल इत्यादि भी आयोजित किये गये जैसे रस्साकशी, तिपहिया दौड़ आदि।

महिलाओं को उनके अधिकारों एवं कानूनी स्थिति के विषय में जानकारी

१५ जनवरी २०१६ को अर्पणा द्वारा करनाल की महिला पुलिस सैल के साथ मिलकर एक शिविर आयोजित किया गया जहाँ महिलाओं को उनके अधिकारों एवं उनकी कानूनी स्थिति के विषय में बता कर उन्हें सशक्त किया जा रहा है जिससे वे अपने प्रति किसी भी अपराध का विरोध कर सकती हैं।

गाँव की महिलाओं ने बैठक में अपने अनुभवों को सबके साथ साँझा किया। सहायक पुलिस अधीक्षक, गीता गहलोत, ने उन्हें अपने खिलाफ़ अत्याचार होने पर चुप न रहने की सलाह दी, उन्हें पुलिस को रिपोर्ट करने अथवा एक दूसरे की सहायता करने के लिए कहा। महिला पुलिस स्टेशन प्रभारी, श्रीमती लक्ष्मी ने महिलाओं के अधिकारों के उल्लंघन की किसी भी घटना के लिए तत्काल कार्रवाई करने की सलाह दी। उन्होंने घरेलू हिंसा अधिनियम के विभिन्न प्रावधानों के विषय में भी बताया।

अर्पणा अपने उदार दाताओं, आईडीआरएफ, सीबीएम, टाईड्ज़ फाउंडेशन एवं बैज नाथ भण्डारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, जो हमें इन स्वास्थ्य एवं विकास कार्यक्रमों में सहयोग देते हैं, का आभारी है।

अर्पणा अस्पताल

स्तन कैंसर और गर्भाशय ग्रीवा कैंसर शिविर

अर्पणा के जाँच शिविर उन ग्रामीण महिलाओं के लिये हैं जो इस सेवा को अन्यथा प्राप्त नहीं कर सकतीं। स्तन कैंसर का स्थानीय चरण में जल्दी पता लग जाने पर जीवित रहने की दर १०० % है। ४-५ दिसम्बर २०१५ को, अर्पणा अस्पताल में, एक गर्भाशय ग्रीवा और स्तन कैंसर की जाँच के शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में रोगियों की जाँच और इलाज डॉ. इला आनन्द एफआरसीओजी (स्त्री रोग विशेषज्ञ), डॉ. विवेक आहुजा एमएस (सर्जन) तथा डॉ. कविता रानी, स्त्री रोग में एमएस (स्त्री रोग विशेषज्ञ) द्वारा किया गया।

३० गाँवों में से १०४ रोगियों ने इस २ दिवसीय शिविर में भाग लिया। यहाँ पर ६ मेमोग्राफ़ी परीक्षण, ३२ पैप स्मीयर, २५ अल्ट्रासाउंड एवं अन्य कई लैब परीक्षण किये गये।

अर्पणा इस सेवा में एशिया इनिशियेटिव से सहयोग के लिए कृष्ण और गीता महता का आभारी है।

नेत्र शिविर

- २५५७ बच्चों की दिसम्बर २०१५ और जनवरी २०१६ में बाल नेत्र शिविरों में जाँच की गई।
- २०४ रोगियों की जनवरी २०१६ में मधुमेह रेटिनोपैथी शिविरों में जाँच की गई।
- २३७ रोगियों की जनवरी २०१६ में मोतियाबिन्द शिविरों में जाँच की गई।

अर्पणा, पिछले कई वर्षों से नेत्र सम्बन्धित सेवाओं के लिए सीबीएम का हार्दिक आभारी है।

We, at Arpana, depend on your support for our programs

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.
FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001
FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002

Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to: **Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037**
Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:

Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037
Arpana Hospital: 91-184-2380801, Info & Resources Office: 91-184-2390905
emails: at@arpana.org and arct@arpana.org

Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.
Mrs. Aruna Dayal, Director Development. Mobile 91-9873015108, 91-9034015109
Websites: www.arpana.org www.arpanaservices.org

Premier Wealth Creators Pvt. Ltd.

Plan Wisely, Live Fully

"A Goal without a Plan is just a Wish"

Famous Words from most successful Investors in the world:

- **Earning**: "Never depend on single income. Make investment to create a second source".
- **Spending**: "If you buys things you do not need, Soon you have to sell things you need".
- **Savings**:" Do not save what is left after spending, but spend what is left after saving".
- **Risk**: "Never Test the depth of river with both the feet".
- **Investment**: "Do not put all eggs in one basket".
- **Expectation**: "Honesty is expensive gift. Do not expect it from cheap people".

The investor should have a Financial Plan for financial goals. Intelligent investing isn't get-rich-quick process. Neither is it a panacea, or one-size-fits-all process. It is rather a process that allows investors to reach certain financial goals through a carefully crafted financial plan.

Please feel free to call or mail us for:
Rajender Rautela : +918800779485 : rajenderr@wealth-creators.in,

www.wealth-creators.in

Financial Planning **Wealth Management** **Investment Advisory**

Premier Wealth Creators Pvt. Ltd.

Plan Wisely, Live Fully

"A Goal without a Plan is just a Wish"

Have you planned for your Retirement or any other Financial Goal ???. We assist you in reaching your Financial Goal through Financial Planning

Financial Planning   Wealth Management   Protection Planning   Investment Advisory

Call or mail us for:

Rajender Rautela : +918800779485 : rajenderr@wealth-creators.in, www.wealth creators.in